64 वां नवांशः—

नवांश एक राशि के नवें हिस्से को कहते हैं। एक राशि अर्थात् 30 अंश में 9 नवांश होते है। प्रत्येक नवांश 3 अंश 20 कला का होता है। 3 अंश 20 कला X 9 = 30 अंश।

कुल 12 राशियां होती है। 12 X 9 = 108 नवांश

वैदिक ज्योतिष में 64 वें नवांश **का विषय बहुत महत्वपूर्ण है। यह** जातक की जन्मकुण्डली **में एक संवेदनशील क्षेत्र है जो आपके जीवन में कुछ बुरी घटनाओं को** इंगित **कर सकता है। इसके** स्वामी **को छिद्र ग्रह** या खरेश **और** नवांश को **खर नवमांश के रूप में भी जाना जाता है। 64 वें नवमांश का यह विशेष नाम दिखाता है कि यह कितना नकारात्मक हो सकता है।**

64 वां नवांश **गणना करने के लिए विधिः—**

चर राशि **(मेष,** कर्क**, तुला, मकर राशि) के लिए - पहला** नवांश स्वयं **की** राशि **का होगा और फिर** दूसरा उससे अगली राशि का **होगा। तो मेष में पहला** नवांश **मेष होगा, दूसरा** नवांश **वृषभ होगा !!** स्थिर राशि **(वृषभ,** सिंह**, वृश्चिक, कुंभ राशि) के लिए - पहला** नवांश 9वीं राशि **का होगा। उदाहरण के लिए वृषभ में पहला** नवांश **मकर राशि होगा और दूसरा** नवांश **कुंभ राशि का होगा।** द्विस्वभाव राशि **(मिथुन, कन्या, धनु, और मीन) के लिए - पहला** नवांश 5 वीं राशि का **होगा। उदाहरण के लिए मिथुन में पहला** नवांश **तुला का होगा, दूसरा** नवांश **वृश्चिक का होगा।**

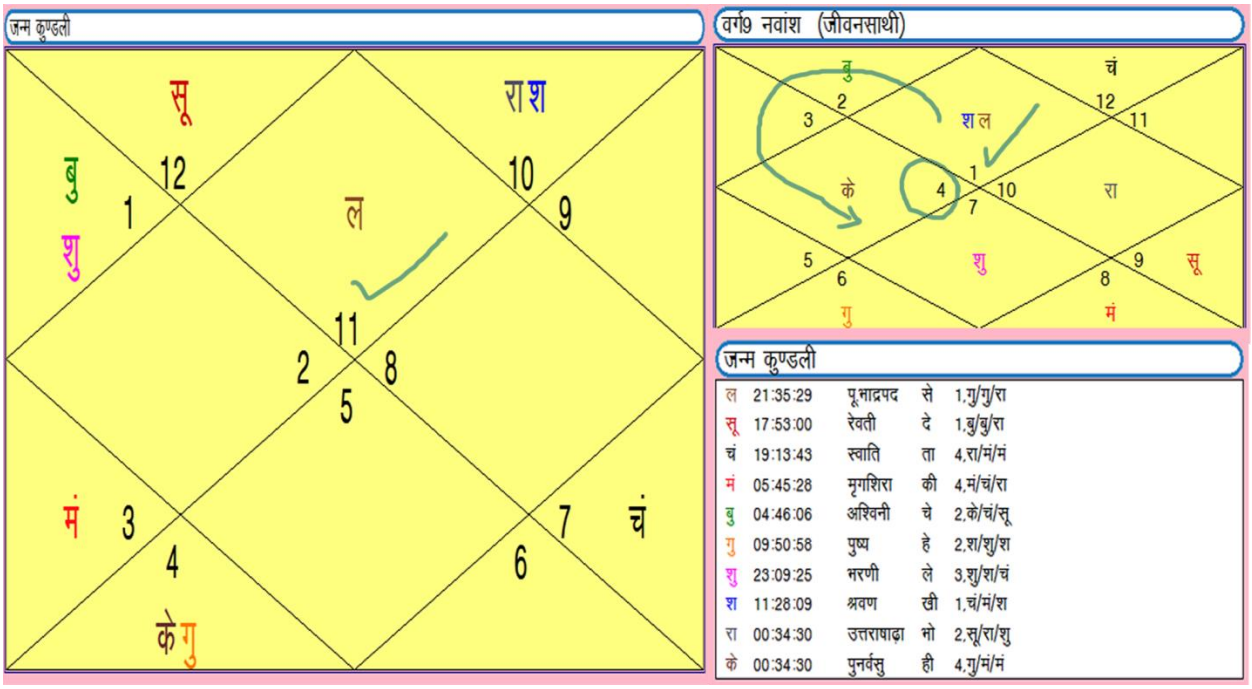

अब कुम्भ लग्न की इस कुण्छली में 64 वां नवांश देखते हैं। लग्न का नवांश मेष है, अर्थात् नवांश कुण्डली का लग्न मेष है। मेष से चार राशि गिनने पर कर्क राशि में 64 वां नवांश आता है। आप मेष नवांश से 64 तक गिन भी सकते हैं। इस प्रकार गिनने पर 12 राशियों के पांच राउण्ड हुए। 12 गुणा 5=60. प्रथम भाव से बारहवें भाव तक 5 राउण्ड हुए। उसके बाद प्रथम भाव से चतुर्थ भाव तक चार राशि और गिने। मेष, वृष, मिथुन और कर्क, अर्थात् कर्क राशि। 64 वां नवांश अष्टम भाव मध्य होता है। लग्न से 7 भाव गुणा 9 नवांश =63 और उससे अगला 64 वां नवांश होता है।

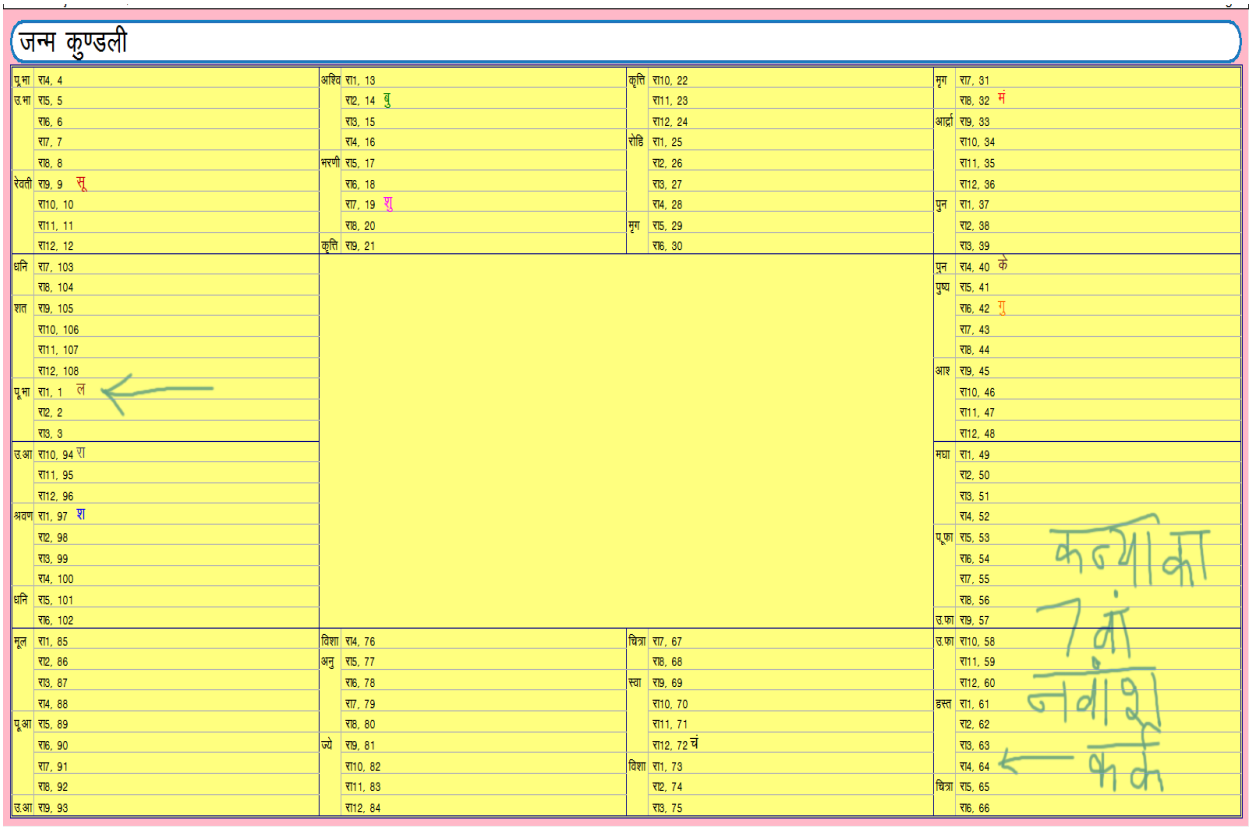

चूंकि हम सभी जानते हैं कि नवमांश के माध्यम से देख जाने पर नवमांश और ग्रह कितन महत्वपूर्ण है। जैसा कि नाम से पता चलता है कि 64 वें नवमांश की नवमांश से गणना की जाती है। वृहद् पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार इसकी लग्न और चंद्र कुण्डली दोनों से गणना की जानी चाहिए। जबकि जातक पारिजात ने इसे चंद्रमा से ही गणना करने का बताया है। अच्छे परिणामों के लिए इसे लग्न और चंद्रमा दोनों से देखना चाहिए। के एन राव के अनुसार यहां एक और जोड़ा जा सकता है। आप प्रत्येक भाव के लिए 64 वें नवमांश की गणना कर सकते हैं और जान सकते हैं कि उस विशेष भाव के कारक के साथ नकारात्मक घटनाएं कब होने जा रही हैं।

उदाहरण के लिए यदि आप पांचवें भाव की गणना करना चाहते हैं तो यह देखने के लिए कि 5 वें का कौन सा फल प्रभावित हो रहा है। मान लीजिए कि कुम्भ लग्न और मेष नवमांश की कुण्डली है, अर्थात् नवांश कुण्डली का लग्न मेष है जो लग्न का नवांश बताता है, तो नवांश लग्न की राशि मेष से चौथी राशि अर्थात् कर्क राशि लग्न का 64 वां नवमांश होगी। इसके स्वामी चन्द्र को छिद्र ग्रह कहा जाता है। चन्द्रमा तुला राशि में होकर मीन नवांश में है। मीन से चार राशि गिनने पर मिथुन राशि चन्द्रमा से 64 वां नवांश राशि हुई। इसके स्वामी बुध को छिद्र ग्रह तथा इसकी दशा को छिद्रा दशा कहा जाता है। यदि आप पांचवें भाव की गणना करना चाहते हैं तो पांचवे भाव के लिए इस भाव के राशि अंश से नवांश निकालना होगा। ध्यान रहे नवांश कुण्डली का पांचवा भाव जन्म कुण्डली के पांचवे भाव का नवांश नहीं है। नवांश कुण्डली के सभी भाव केवल जन्मलग्न क व उससे आगे के टुकड़े हैं। लग्न मध्य से आगे के नवांश है। इस विषय में मैनें ''नवांश कुण्डली के गूढ रहस्य'' नामक विडियो में विस्तार से समझाया है। आप देख सकते हैं। पंचम भाव के नवांश के लिए आप पंचम भाव स्पष्ट के राशि अंश से निकालें। उसके बाद पांचवे भाव का 64 वां नवांश ज्ञात करना होगा। इसके लिए पंचम भाव की नवांश राशि से चौथी राशि में 64 वां नवांश होगा। उस नवांश में गोचर से जब कोई पाप ग्रह भ्रमण करता है तो सन्तान, विद्या आदि की समस्या होती है।

उदाहरण के लिए इस कर्क लग्न की कुण्डली में देखियेः—

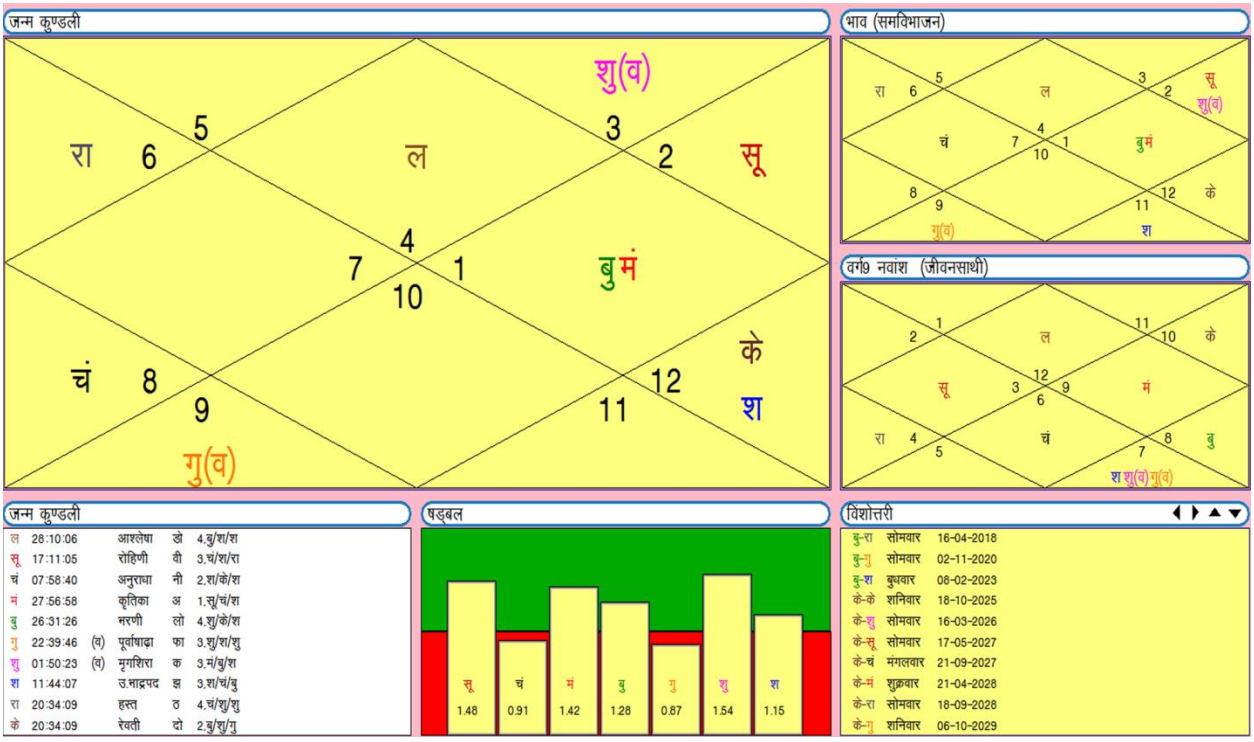

भाव	भाव आरम्भ	भाव मध्य	भाव अन्त
प्रथम भाव	कर्क 12:57:51	कर्क 28:10:06	सिंह 12:57:51
द्वितीय भाव	सिंह 12:57:51	सिंह 27:45:35	कन्या 12:33:19
तृतीय भाव	कन्या 12:33:19	कन्या 27:21:04	तुला 12:08:48
चतुर्थ भाव	तुला 12:08:48	तुला 26:56:32	वृश्चिक 12:08:48
पंचम भाव	वृश्चिक 12:08:48	वृश्चिक 27:21:04	धनु 12:33:19
षष्ठ भाव	धनु 12:33:19	धनु 27:45:35	मकर 12:57:51
सप्तम भाव	मकर 12:57:51	मकर 28:10:06	कुंभ 12:57:51
अष्टम भाव	कुंभ 12:57:51	कुंभ 27:45:35	मीन 12:33:19
नवम भाव	मीन 12:33:19	मीन 27:21:04	मेष 12:08:48
दशम भाव	मेष 12:08:48	मेष 26:56:32	वृष 12:08:48
एकादश भाव	वृष 12:08:48	वृष 27:21:04	मिथुन 12:33:19
द्वादश भाव	मिथुन 12:33:19	मिथुन 27:45:35	कर्क 12:57:51

इसमें पंचम भाव मध्य वृश्चिक राशि में 27 अंश 21 कला 04 विकला है। यह स्थिर राशि है। अतः पहला नवांश इससे 9 वीं राशि का अर्थात् कर्क राशि का होता है। यहां कर्क से 9 वां नवांश लेना है क्योंकि 10 अंश तक 3 नवांश, 20 अंश तक 6 नवांश और इससे आगे का 3 रा नवांश अर्थात् 9 वां नवांश होगा जो पहले नवांश कर्क राशि से गिनने पर मीन राशि का होता है। पंचम भाव का नवांश मीन राशि में हैं। इसका 64 वां नवांश ज्ञात करने के लिए इससे चौथी राशि अर्थात् मिथुन राशि आती है। पंचम भाव का 64 वां नवांश मिथुन राशि का होगा। मिथुन का स्वामी बुध है। मिथुन में गोचर का राहु अप्रेल 2019 के बाद रहेगा। बुध महादशा में राहु अन्तर्दशा भी रहेगी। अतः उस समय इस जातक को विद्या में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

विंशोत्तरी

बु-रा	सोमवार	16-04-2018
बु-गु	सोमवार	02-11-2020
बु-श	बुधवार	08-02-2023
के-के	शनिवार	18-10-2025
के-शु	सोमवार	16-03-2026
के-सू	सोमवार	17-05-2027
के-चं	मंगलवार	21-09-2027
के-मं	शुक्रवार	21-04-2028
के-रा	सोमवार	18-09-2028
के-गु	शनिवार	06-10-2029

इसी प्रकार से आप सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों के लिए 64 वें नवमांश की गणना कर सकते हैं और जब पापग्रह इनके 64 वें नवमांश पर गोचर करते हैं तो वह भाव जिसके 64 वें नवमांश में पापग्रह जाते हैं, तथा वह ग्रह जिनके 64 वें नवमांश में पापग्रह जाते हैं वे जिन भावों के स्वामी हो उन भावों को पीड़ित करते हैं।

ग्रन्थों के अनुसार "जन्म कुण्डली में जब 64 वें नवमांश का स्वामी ग्रह शनि, राहु, केतु या मंगल के साथ छठे आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो जाये तो जातक की अपने ही लोगों द्वारा अकाल मृत्यु होती है, जिसमें उसके रिश्तेदार नहीं होते हैं।

1–यदि 64 वें नवांश में कोई पापग्रह गोचर कर रहा हो तथा वहां पहले से ही कोई पापग्रह ग्रह स्थित हो तो परिणाम भयंकर हो सकते हैं।

2–किसी ग्रह से 64 वें नवांश में कोई पापग्रह स्थित हो तो वह पापग्रह उस ग्रह के कारकत्व व उन भावों को जिनका वह ग्रह स्वामी है, के लिए हानिकारक होता है।

3–यदि कोई ग्रह लग्न व चन्द्रमा से 64 वें नवांश व 22 वें द्रेष्काण का स्वामी हो और वह किसी ऐसी राशि में गोचर कर रहा हो जिसमें कोई अष्टकवर्ग बिन्दु न हों तो वह मृत्य् लाता हैं।

22वां द्रेष्काण भी 64वें नवांश की तरह ही संवेदनशील है। इसकी चर्चा फिर कभी करेंगे।

4–यदि चन्द्रमा जिस नवांश में है, उसका स्वामी अपने 64 वें नवांश के स्वामी का शत्रु हो तो जातक अल्पायु होता है।

5–यदि चन्द्रमा जिस नवांश में है, उसका स्वामी अपने 64 वें नवांश के स्वामी का सम हो तो जातक मध्यायु होता है।

6–यदि चन्द्रमा जिस नवांश में है, उसका स्वामी अपने 64 वें नवांश के स्वामी का मित्र हो तो जातक दीर्घायु होता है।

उदाहरण के लिए संजय गांधी की कुण्डली में चन्द्रमा कर्क नवांश में है जिसका स्वामी स्वयं चन्द्रमा है। अब चन्द्रमा से 64 वां नवांश अर्थात् नवांश कुण्डली में चन्द्रमा से 4 भाव आगे गिनने पर तुला राशि आती है जो चन्द्रमा का 64 वां नवांश हुआ। इसका स्वामी शुक्र चन्द्रमा का शत्रु है। अतः आयु को कम करता है। संजय गांधी की मृत्यु कम आयु में हो गई थी।

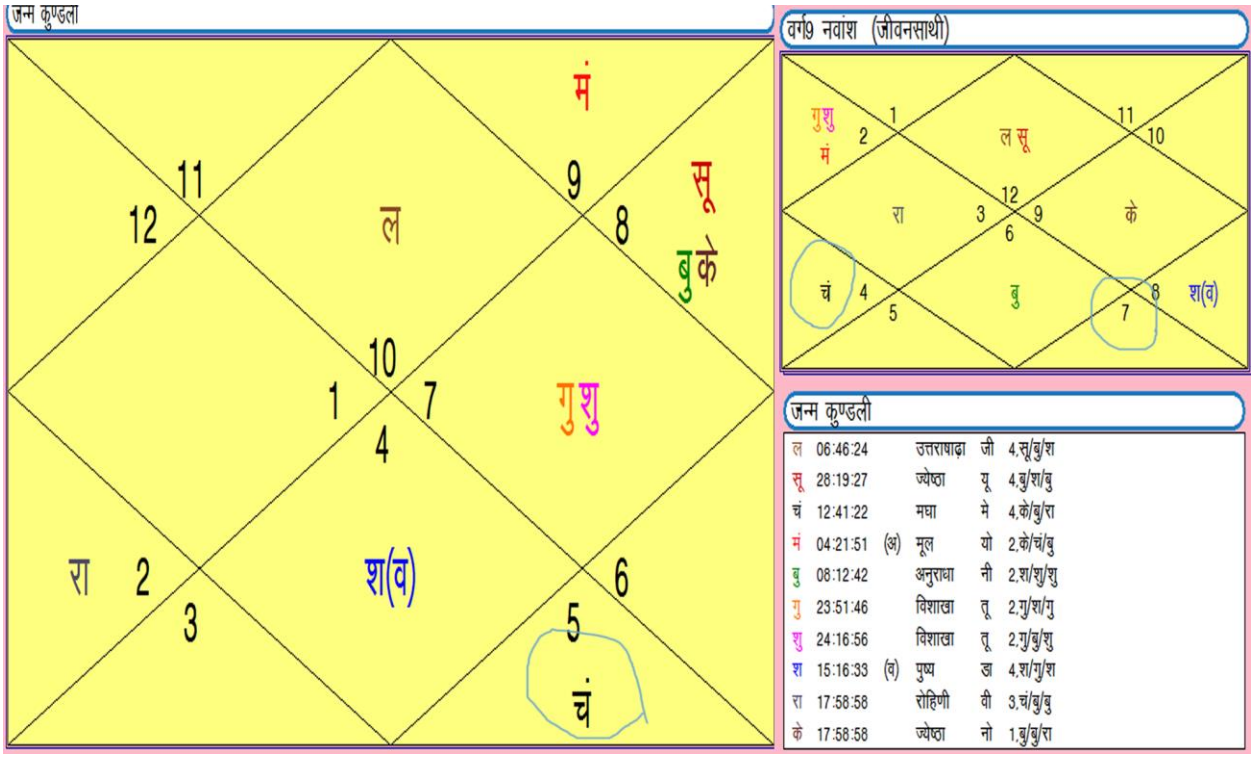

इसी प्रकार से हम जन्म लग्न से व अन्य ग्रह से हम देख सकते हैं कि पापग्रह उनके 64 वें नवांश पर से गोचर करते हैं, विशेषतः धीमी गति से चलने वाले ग्रह जैसे शनि, राहु व केतु गोचर करे तो वह समयावधि हानिकारक होती है।

सूर्य के 64 वें नवांश पर या उससे केन्द्र या त्रिकोण में जब शनि या राहु का गोचर आता है तो पिता को स्वास्थ्य या आयु सम्बन्धी कष्ट होता है। इसी प्रकार से चन्द्रमा के 64 वें नवांश से माता के बारे में, मंगल से भाई के बारे मे, बुध से बुआ, गुरू से सन्तान, शुक्र से जीवन साथी, शनि से स्वयं के स्वास्थ्य के बारे में, कारकत्व के आधार पर निर्णय करें।

इस प्रकार से 64 वें नवांश का महत्व आपने देखा।